Asian Mirror - Volume XI, Issue II, July 2024
International Research Journal (Double-blind, peer-reviewed)
ISSN : 2348-6112
Impact Factor - 3.635
Date of Acceptance : 24 January 2024
DOI - 10.21276/am.2024.11.2.AN4

© Dr. Rajesh Kumar Sethiya

4 Progressivism in Shani's novels

Dr. Rajesh Kumar Sethiya

Assistant Professor, Hindi, Government Naveen College Tokapal, Bastar

Abstract

The literary form of Marxism is rooted in progressivism, which has evolved through manifestos and writers' associations. Central to progressivist literature are themes of sympathy for marginalized groups, such as farmers, laborers, and women, alongside a rebellion against capitalist and exploitative classes. This literary tradition also emphasizes opposition to hypocrisy, orthodoxy, and superstition. Many progressive writers have adhered to this axis, with some openly embracing leftist values, while others, though sympathetic, engage with these themes more organically, without full ideological commitment. Gulsher Khan Shani, an important figure in this context, exemplifies such an approach.

Born on May 16, 1933, in Jagdalpur, Bastar, Chhattisgarh, Shani is recognized as the first prominent Hindi writer from the region. His well-known novels, Kaalajal, Saanp aur Seedhi, Nadi aur Seepiyon, and Ek Ladki ki Diary, reflect his distinctive narrative style. Although not strictly bound by any specific ideology, as he himself states, "I am neither in the Heyo nor in the Sheyo," his works subtly incorporate progressive values. These values appear naturally within his fiction, presented in a spontaneous and unforced manner, highlighting Shani's unique literary perspective.

Keywords: *Shani's novels, Progressive values in Shani's novels, Shani's novels and Progressivism, Shani in the mirror of progressivism.*

Citation: Dr. Rajesh Kumar Sethiya (2024). Progressivism in Shani's novels, **Asian Mirror**– July 2024, 11(2):53-58. doi - 10.21276/am.2024.11.2.AN4

Asian Mirror - Volume XI, Issue II, July 2024
International Research Journal (Double-blind, peer-reviewed)
ISSN : 2348-6112
Impact Factor - 3.635
Date of Acceptance : 24 January 2024
DOI - 10.21276/am.2024.11.2.AN4

© Dr. Rajesh Kumar Sethiya

4. शानी के उपन्यासों में प्रगतिवाद

Dr. Rajesh Kumar Sethiya

Assistant Professor, Hindi, Government Naveen College Tokapal, Bastar

शोध–सारांश

मार्क्सवाद का साहित्यिक रूप प्रगतिवाद है। प्रगतिवादी साहित्य घोषणा पत्रों एवं लेखक संघो के माध्यम से आगे बढ़ा है। इसमें कृषक, मजदूर नारी आदि सर्वहारा उपेक्षित जनो के प्रति सहानुभूति तथा पूंजीपति एवं शोषक वर्गो के प्रति विद्रोह का भाव मुख्य है। पाखंड, रूढ़ि अंधविश्वास विरोध इसमें मुख्य स्वर है। इसी धूरी पर समस्त प्रगतिवादी साहित्यकार रचनारत रहे है। कुछ ऐसे भी लेखक रहे जो वामपंथी प्रगतिवादी मूल्यो को तर जीह तो देते रहे परंतु विधिवत, आकंढ उसमें डूबे नहीं। वे अनायास ही, बिना यत्न के सहज भाव से प्रगतिवादी मूल्यों को उद्घाटित करते रहे। ऐसे रचनाकारो में गुलशेर खां शानी भी प्रमुख है।

गुलशेर खान शानी बस्तर अंचल से जुडे हिंदी के प्रथम महत्वपूर्ण लेखक है।[1] इनका जन्म 16 मई 1933 को छ.ग. के बस्तर अंचल के जगदलपुर में हुआ था। उन्होंने कालाजल, सॉप और सीढ़ी, नदी और सीपियॉ, एक लडकी की डायरी आदि उपन्यास लिखे हैं। उनका कालाजल, सॉप और सीढ़ी व्यापक रूप से लोक प्रिय उपन्यास हैं। वे किसी वाद या विचारधारा से बंधे हुए रचनाकार नहीं है। उनको स्वीकारोक्ति भी है– ''मैं न हीयो में हूँ न शीयो में''[2] यह उनकी वाद विहीन लेखकीय दृष्टि को दर्शाती है। परंतु उनके उपन्यासों में प्रगति वादी जीवन मूल्य यत्र तत्र दिखाई देते है, यह अनायास, सहज रूप में उनके कथा साहित्य में चित्रित है।

मूल शब्द

शानी के उपन्यास, शानी के उपन्यासो में प्रगतिवादी मूल्य, शानी के उपन्यास और प्रगतिवाद, प्रगतिवाद के आइने में शानी।

Citation: Dr. Rajesh Kumar Sethiya (2024). Progressivism in Shani's novels, **Asian Mirror**– July 2024, 11(2):53-58. doi - 10.21276/am.2024.11.2.AN4

Asian Mirror - Volume XI, Issue II, July 2024
International Research Journal (Double-blind, peer-reviewed)
ISSN : 2348-6112
Impact Factor - 3.635
Date of Acceptance : 24 January 2024
DOI - 10.21276/am.2024.11.2.AN4

© Dr. Rajesh Kumar Sethiya

शानी अपनी कहानियों के साथ अपने उपन्यासों में भी अपने प्रगतिशील तेवरों को दिखाते हैं। वे जीवन की यथार्थताओं के अनुरूप चरित्रों का विकास करते हैं। अपनी कई रचनाओं में शानी बार–बार वैवाहिक कर्मकाण्डों को झुठलाते दिखते हैं, साथ ही अंतरजातीय विवाह की वकालत करते दिखते हैं। 'कालाजल' में बिट्टी रौताइन का मिर्जा करामत बेग तथा रज्जूमियॉ से सम्बन्ध हो या सल्ली आपा का किसी और से सम्बन्ध।[3] 'सॉप और सीढ़ी' में हीरासिंह–धान मॉ–कालिकाचरण का सम्बन्ध हो या रधुनाथ–समली का प्रेमविवाह।[4] इन सभी जगहों में शानी वैवाहिक रूढ़ियों को तोड़ते दिखते हैं। लेकिन यह विरोध के लिए विरोध नहीं है।

''सॉप और सीढ़ी' शानी की विशिष्ट रचना है। इसका नायक हीरासिंह पूंजीवादी व्यवस्था में कुटीर एवं लघु उद्योगों के धीरे–धीरे क्षय होते जाने के फलस्वरूप परमुखापेक्षी होने की दारूण स्थिति का उद्घाटन करता है। हीरासिंह के संदर्भ में 'गोदान' के होरी की स्मृति स्वाभाविक रूप से आती है। जब हीरासिंह का करघा बंद होता है और सलफी–ताड़ी का पेशा छूटता है तो वह सोनपुर के खदान में मजदूरी करने जाता है। पर वहॉ भी छंटनी का शिकार होकर अधेड़ अवस्था में बेरोजगारी का दंश झेलता है। लेकिन हीरासिंह में शोषण के विरूद्ध आवाज बुलंद करने का ताब भी है। जब नगरनार का सेठ बुनकरों का शोषण करता है तब हीरासिंह विरोध करता है। यही नहीं, अपने बीवी–बच्चों के पेट की चिन्ता छोड़ सोनपुर के मजदूरों के आंदोलन, हड़ताल और जुलूस का अगुआ बनता है। परंतु हीरासिंह लम्बी रेस का घोड़ा नहीं है। वह जल्दी थक जाता है और कुंठा में शराब की लत को गले लगाता है और अंततः मृत्यु को प्राप्त होता है। इस तरह शानी दिखाते है कि पूजीवादी व्यवस्था में व्यक्ति का विरोध कितना निरीह है। 'सॉप और सीढ़ी' में पूंजीवाद और प्रगतिवाद ग्रामीण जीवन और शहरी जीवन के संक्रमण तथा रूढ़िवाद एवं अंधविश्वासों का सजीव चित्रांकन है। इस दृष्टि से यह एक महत्वपूर्ण प्रगतिवादी रचना है।

'कालाजल' में शानी निम्नमध्यमवर्गीय मुस्लिम जीवन की जड़ता और ठहराव भरे परिवेश को उजागर करते हुए कहीं अधिक प्रगतिशील नजर आते हैं। वे पाखण्ड को, असत्य को इस खूबी से पेश करते हैं कि सारी सच्चाई उजागर हो जाय। वे मुर्हरम के अवसर पर 'हाल', 'सवारी' आना आदि अंधविश्वासों का भंडाफोड़ करते हैं। मुहर्रम के जुलूस में गोरे मामा जो खूब हुल्लड करते हैं और लोग जिसे 'हाल' आना कहते हैं, उसका शानी बड़ी सफाई से रहस्योद्घाटन करते हैं–'किसी टार्च वाले सज्जन ने उन्हें रोशनी दिखाई और यह देखकर उनकी ऑखे भर आई कि कपड़े में दो–चार धब्बे लगे हुए हैं। भीड़ में किसी नामुराद ने ऑलपिन चुभोकर उनका इम्तहान लेने की कोशिश की थी।'[5] मुहर्रम के माह में बब्बन की

Citation: Dr. Rajesh Kumar Sethiya (2024). Progressivism in Shani's novels, Asian Mirror– July 2024, 11(2):53-58. doi - 10.21276/am.2024.11.2.AN4

Asian Mirror - Volume XI, Issue II, July 2024
International Research Journal (Double-blind, peer-reviewed)
ISSN : 2348-6112
Impact Factor - 3.635
Date of Acceptance : 24 January 2024
DOI - 10.21276/am.2024.11.2.AN4

© Dr. Rajesh Kumar Sethiya

अम्मी अपना घर–बार बचाने के लिए सब जादू टोटके आजमाती है। एक मुजाबिर रहमत चाचा की शरण में जाती है। वह मन्नतें मॉगती फिरती है पर अपने ढहते हुए घर को बचा नहीं पाती।

'कालाजल' के लगभग सारे नारी पात्र रूढ़ सामंती ढॉचे के बीच कसमसाहट और उद्वेलन का शिकार हैं। इस नियति और ढॉचे को तोड़ने की जद्दोजहद और आकुलता सल्लो आपा में लक्षित होती है। उसके व्यक्तित्व की छवि तथा चरित्र पाठक के अंतस में कहीं गहरे बैठ जाती है। यह जिंदादिल लड़की वर्जनामुक्ति का प्रयास करती है। अश्लील किताबें पढ़ने, पुरूष वेशभूषा में घूमने, सिगरेट पीने तथा घर से गायब रहने के द्वारा वह रूढ़ मर्यादा को तोड़ने का प्रयास करती है। वह किसी से प्रेम करती है और मन से उसे अपना पति भी मान चुकी है। अपनी मॉग में वह अफशां भी भरती है। वह गर्भवती भी होती है पर लोकलाज के कारण संभवतः गर्भपात की प्रक्रिया में करूण मौत मरती है। इस पर फूफी बब्बन को बताती है, 'सल्लो कुंवारी ही मरी है लेकिन फातिहा तो उसकी रूह की हो रही है न?'[6] सल्लो आपा की कारूणिक मृत्यु हमें उदार सामाजिक व्यवस्था बनाने की मॉग करती है।

'कालाजल' का मोहसिन एक ऐसा पात्र है जो निम्न मध्यमवर्गीय युवकों का प्रतिनिधि है जो अपने संकुचित दायरे को छोड़कर बाहरी दुनिया से जुड़ना चाहते हैं। राजेन्द्र यादव के शब्दों में, 'अपने को फलांग सकने की कहीं और से जुड़ने की बेचैनी ही उसकी शक्ति है।'[7] मोहसिन की यह शक्ति ही कालांतर में उसे राष्ट्रीय चेतना से जोड़ती है। यह शख्स पी.सी. नायडू से जुड़कर स्वराज्य आंदोलन का अग्रदूत बनता है। गॉव–गॉव आजादी की अलख जगाता है। यूनियन जैक की सलामी का बहिष्कार करके स्कूल से ही बहिष्कृत होता है। मोहसिन की पीड़ा के एक नहीं अनेक कोण हैं। एक ओर तो वह स्वातंत्र्योत्तर मोहभंग से पीड़ित है जिसके अनुसार पी.सी. नायडू जैसे स्वतंत्रता सेनानी का कोई नामलेवा तक नहीं रह गया और स्वयं मोहसिन भी उपेक्षित पड़ा है। दूसरी ओर एक आम मुसलमान को देश में जिस परिस्थिति का सामना करना पड़ता है, उसकी सहज परिणति है–उत्तरकालीन मोहसिन। उसे अपने विगत जीवन की गतिविधियॉ व्यर्थ लगती हैं और वह पाकिस्तान पलायन करने की मानसिकता बना लेता है। मोहसिन के इस जीवन प्रसंग के माध्यम से शानी व्यवस्था में बदलाव की जरूरत पर बल देते हैं। साथ ही चाहते हैं कि मनुष्य के बीच धर्म के आधार पर भेदभाव न हो।

'कालाजल' के जड़ता भरे परिवेश को जीवंत करने के संदर्भ में पी.सी. नायडू का चरित्र भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। जो व्यक्ति मुर्दो की तरह सोये हुए क्षेत्र के जनों को जगाने के लिए अपना घर–बार फूॅक डाले, उससे बड़ा प्रगतिवादी भला कौन होगा? लेकिन इतना सब करने के बाद भी लोग अपनी उदासीनता

Citation: Dr. Rajesh Kumar Sethiya (2024). Progressivism in Shani's novels, Asian Mirror– July 2024, 11(2):53-58. doi - 10.21276/am.2024.11.2.AN4

Asian Mirror - Volume XI, Issue II, July 2024
International Research Journal (Double-blind, peer-reviewed)
ISSN : 2348-6112
Impact Factor - 3.635
Date of Acceptance : 24 January 2024
DOI - 10.21276/am.2024.11.2.AN4

© Dr. Rajesh Kumar Sethiya

और कूपमंडूकता में डूबे रहते हैं, तो नायडू हताशा में डूब जाते हैं और विक्षिप्त हो जाते हैं। उनकी करूण परिस्थिति 'मैला ऑचल' के बावनदास की याद दिलाती है। नायडू बस्तर में आजादी की ऐसी चिंगारी थे जो इस वनांचल में भड़क उठते तो दावानल बन जाते, परंतु लोगों की स्वार्थपरता, उदासीनता के चलते वे स्वयं राख बनकर ठंडे हो जाते हैं।[8]

शानी की 'नदी और सीपियॉ' में स्वर्णा जिस पुरूषवादी मानसिकता का शिकार होती है, वह भी व्यवस्था में परिवर्तन की मांग करता है। 'एक लडकी की डायरी' में अनीस बेग के माध्यम से शानी प्रगतिवादी नारी का रूप हमारे सम्मुख रखते हैं। शानी के पात्रों में प्रगतिशीलता तो दिखती है। वे वैचारिक उन्नति के शिखर पर आरूढ़ होते तो है, परंतु उनकी प्रगतिशीलता बरकरार नहीं रह पाती। वे परिस्थितियों की खाइयों में जा गिरते हैं और पोखर के पानी की तरह सड़ने–गलने को अभिशप्त होते हैं। शानी के पात्रों के इस पहलू का यह रहस्य है कि शानी किसी विशेष विचारधारा या दर्शन की बंधी–बंधाई नियमावली में नहीं फंसे हैं। वे यथार्थ को अनुभव की प्रामाणिकता के साथ उद्घाटित करते हैं। शानी न तो पूर्ण रूप से मनुष्य पर दृष्टि केंद्रित करते हैं और न ही उसके परिवेश पर मुख्य फोकस करते हैं वरन् वे परिवेश–परिस्थिति से उत्पन्न मनुष्य की जीवन नियति के अंकन में अपना विश्वास रखते हैं। यह ठीक वैसा ही है, जैसे जिस गुणवत्ता का बीज, खाद, मिट्टी, हवा और पानी होगा, उसी तरह का पौधा होगा। इसीलिए उनके पात्र मूर्त, जीवंत और जागृत बन गए हैं।

शानी जीवन यथार्थ के अंकन में विश्वास रखते हैं। वे वैयक्तिक अनुभूति को सामाजिक अनुभूति का रूप देते हैं। ऐसा करते हुए भी वे मनुष्य के स्वभाविक रूप का ध्यान रखते हैं। आदर्शनिष्ठ वायवीय पात्रों की सृष्टि में उनका मन नहीं रमता। यही उनकी प्रगतिशीलता है।

निष्कर्ष

इस प्रकार शानी के उपन्यासो में निम्नमध्यवर्गीय मुस्लिम जीवन, ग्रामीण एवं कस्बाई जीवन, उसका ठहराव, जड़ता, अंधविश्वास एवं पाखंड का ऑखो देखा अंकन है। परंतु यह किसी वाद से बंधे जीवन दर्शन का अंकन नहीं है। शानी के उपन्यासों में प्रगतिवाद साया सप्रयास ढूंढना व्यर्थ है। उनके यहॉ प्रगतिवादी मूल्य अनायाश जीवन चित्रण के प्रसंग में सहज रूप में उद्घाटित हुए हैं।

संदर्भ

Citation: Dr. Rajesh Kumar Sethiya (2024). Progressivism in Shani's novels, Asian Mirror– July 2024, 11(2):53-58. doi - 10.21276/am.2024.11.2.AN4

Asian Mirror - Volume XI, Issue II, July 2024
International Research Journal (Double-blind, peer-reviewed)
ISSN : 2348-6112
Impact Factor - 3.635
Date of Acceptance : 24 January 2024
DOI - 10.21276/am.2024.11.2.AN4

© Dr. Rajesh Kumar Sethiya

1. बस्तर का लोक जीवन और शानी की कहानियॉ–डॉ. राजेश सेठिया एवं दीपक सेठिया पृष्ठ–7
2. हॅस–मार्च, 1995 पृष्ठ–10
3. कालाजल–शानी–पृष्ठ 7
4. सॉप और सीढी–शानी–पृष्ठ 80
5. कालाजल–शानी–पृष्ठ 90
6. –वही–पृष्ठ 35
7- –अठारह उपन्यास–राजेन्द्र यादव पृष्ठ–40
8- –बस्तर का जीवन यथार्थ और शानी के उपन्यास–डॉ. राजेश सेठिया–पृष्ठ 292

Citation: Dr. Rajesh Kumar Sethiya (2024). Progressivism in Shani's novels, Asian Mirror– July 2024, 11(2):53-58. doi - 10.21276/am.2024.11.2.AN4